चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय
'देवीना' उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्याएँ

4.1 जातीयता की समस्या

जातीयता की समस्या यह एक गंभीर समस्या है। जातिव्यवस्था यह मनुष्य ने ही निर्माण की है लेकिन आज वह समाज के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती बन गई है। "जातिवाद और संप्रदायवाद ने देश को खोखला किया है। जाँत-पाँत, छुआछुत, भेद-भाव इनको हमेशा हमारे शोषकों, प्रचारकों ने बढ़ावा दिया और हमारा शोषण किया। वास्तव में जन-जन का मूल एक है किंतु भय, शोषण और अंधविश्वास ने हमारे जीवन को भीतर और बाहर दोनों और से विषाक्त कर दिया है। और हमें अज्ञान के अंधकार में भटकने के लिए छोड़ दिया है।"[1] जातीयता ने अब मनुष्य जीवन को कलंकित किया है। प्रस्तुत 'देवीना' उपन्यास में चित्रित जातीयता की समस्याओं को हम निम्न रूप से देख सकते हैं।

4.1.1 समाज की दूषित मानसिकता

परंपरागत जातीयता की समस्या के कारण समाज के हर व्यक्ति की मानसिकता दूषित बन गई है। जाति मनुष्य के जन्म से ही उसे प्राप्त होती है तथा मरते दम तक उसका पीछा नहीं छोड़ती। समाज का कोई इंसान अच्छे कर्म से या बुरे कर्म से मशहूर होता है, तो उस इंसान की पहली जात देखी जाती है। इस तरह की दूषित मानसिकता का शिकार हमारे उपन्यास की नायिका 'देवीना' बन जाती है। वह एक नाजायज औलाद थी। अतः उसे लोक लाज के कारण सड़क के किनारे फेंक दिया जाता है। तब उसका पालन पोषण मंगलबाबा तथा बनिया करते हैं। लेकिन समाज में उस बच्ची को लेकर खुसर-फुसर होती है, "अरे मंगलबाबा चमार हो गए। ई कैसे भई? वह जो बुचिया है न, वह चमाइन की लड़की है।"[2]

प्रस्तुत देवीना उपन्यास में जातियता संबंधी समाज के दूषित मानसिकता का दर्शन होता है। इस उपन्यास की नायिका 'देवीना' को लेकर मतलब उसकी जाती को लेकर लहरतारा गाँव में बड़ी महाभारत घटीत होती है। और मानो उसका सारा समाज जीवन ही अस्थिर होता है। जब तक जाँति-पाँति के विषय में खुलेआम, सार्वजनिक जगहों पर बोला जाता है तो बड़ी आदर्शवादीता की, बड़ी-बड़ी आधुनिकता की बातें की जाती है। लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर आचरण करते समय आदमी का व्यवहार कुछ और ही होता है। मनुष्य भले ही बाह्य तौर पर जातिप्रथा संबंधी कुछ भी बातें करें लेकिन अंतरिकस्तर पर वह जाँति-पांतिवादी ही होता है। मंगलबाबा तथा बनिया उनके आस-पड़ोस के लोगों से काफी मिलजुलकर रहते थे। अतः गाँव के लोग भी

उन्हें अच्छी नजर से देखते थे। लेकिन जैसे ही मंगलबाबा अपने घर में इन्सानियत के नाते एक लावारिस बच्ची को लाते हैं तथा उस लावारिस को अपना ही नाम देकर बेटी जैसा पालने का निश्चय करते हैं। तब सारा 'लहरतारा' गाँव मंगलबाबा की निंदा करता है। अतः मंगल्बाबा एक शरीफ आदमी होने के कारण उस लोग निंदा को चुपचाप सहता है। लेकिन उसकी पत्नी 'बनिया' इस लोग निंदा को सह नहीं पाती। वह गाँव के चौराहे पर खड़ी होकर कहती है। हाँ! हम लोगों ने एक लावारिस बच्ची को पाल रखा है। भले वो मुसलमान हो या चमार हो इसमें तुम्हारे बाप का क्या जाता है। मुझे मालुम है किस किस के घर में अब तक क्या-क्या होता आया है। आप गाँववालों को हमारे परिवार का जो करना है करो। इसीतरह समाज की दूषित मानसिकता का दर्शन होता है।

4.1.2 मनुष्य से भी जाति श्रेष्ठत्व की भावना

जातीयता के गहरे प्रभाव से आज वर्तमान समाज में मनुष्य से भी उसकी जाति श्रेष्ठ मानी जाती है। एक तरह इंसान चांद पर अपनी कर्मभूमि बनाने की सोचता है पर दूसरी तरफ वह अपनी इन्सानियत से दूर होता जा रहा है। जातीयवादी मानसिकता के कारण समाज में दीन-दलितों की हालत जानवर से भी बत्तर हो रही है। आंतरजाति विवाह का सरकारने पुरस्कार किया है लेकिन अभी भी समाज में आंतरजातीय विवाह को साफदिल से अनुमति नहीं दी है। अगर आंतरजातीय विवाह समाज में होंगे तो जातीयता की जड़े अपने आप शिथिल हो जाएगी और एक दिन उनका अस्तित्व मिट जाएगा। साहित्य के माध्यम से भी कतिपय-कवियों ने आंतरजातीय विवाह को बढ़ावा दिया है। डॉ. लाल ने अपने 'दर्पण' नाटक में 'हरिपथ' अपने पिता को कहता है, "जाति, स्थान कुल परंपरा, मेरे लिए उनका कोई भी महत्व नहीं है। मेरे लिए सारा महत्व किसी के आंतरिक परिचय का है।"[3]

'देवीना' उपन्यास का नायक देवकुमार खत्री जाति का है तथा उसका प्रेम एक लावारिस लड़की देवीना से होता है। अतः वह उससे विवाह करना चाहता है। लेकिन देवकुमार का बड़ा भाई राजकुमार इस विवाह का कड़ा विरोध करता है। क्योंकि वह देवीना निम्नजाति की है। उस वक्त बगावत करते हुए देवकुमार अपने भाई से कहता है, "कुल-जाति धर्म से मेरा कोई संबंध नहीं। यह सब मेरे लिए अब बेमानी है। मैंने जो पाया, जो देखा वहीं मेरा अपना है और वहीं मेरे लिए मायने रखता है। बाकी और कुछ नहीं।"[4] इस तरह जातीयता की समस्या के कारण मनुष्य मनुष्यता के बीच का अंतर बढ़ता रहा है।

प्रस्तुत देवीना उपन्यास में कतिपय ऐसे प्रसंग आते हैं कि उस वक्त मनुष्य से की श्रेष्ठत्व उसकी जाति को दिया जाता है। देवीना जो उपन्यास की नायिका है वह अपने

स्वकर्तृत्व से अपने व्यक्तिमत्व का विकास करती है। वह एक लावारिस बच्ची होकर भी अपने आत्मबल तथा आत्मविश्वास से बी.ए. तक पढ़ाई करती है। अब वह जब एक युवती बनी है। तो सहज भावना के रूप में राजकुमार नामक युवक से प्रेम करती है। अतः प्रेम करते वक्त उसे देवकुमार की जाति का पता नहीं है तथा देवकुमार को भी देवीना की कुल जाति का पता नहीं है। जब देवीना तथा देवकुमार में पहली ही मुलाकात में प्रेम होता है, तथा दोनो आपस में विवाह करने का फैसला करते हैं। लेकिन जब देवकुमार अपने बड़े भाई राजकुमार को इस प्रेम संबंधी अनुमती माँगता है तब राजकुमार उसके इस फैसले की निंदा करते हैं तथा उस विवाह का कडा विरोध करते हैं। अतः देवीना बी. ए. तक पढ़ी लिखी होते हुए भी केवल उसकी जाँति निम्नस्तर की होने कारण उसका विरोध होता है।

अपनी कर्मभूमि लहरतारा गाँव में भी देवीना को 'गादूर मिसिर' नामक ब्राहमण की जाँति-पाँति विषयक धारणा का शिकार होना पड़ा है। तथा केवल देवीना की जाँति नीच जाँति होने कारण उसे हर वक्त उस लहरतारा गाँव के मुखिया गादूर मिसिर से अपमानित होना पड़ा है अतः मनुष्य को अपने हृदय को मन बुद्धि को व्यापक बनाना चाहिए। तथा जाँति पाँति संबंधी अपनी अंतरिक भावना को पूर्वग्रह रहित बनाना चाहिए। तब मनुष्य से बढ़कर मानी गई जाँतियता श्रेष्ठत्व की भावना नष्ट होगी।

4.1.3 दीन-दलितों पर अत्याचार

परंपरागत जातीयता के कारण ही समाज में दीन-दलितों के ऊपर अन्याय, अत्याचार करके उनका शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक शोषण किया जाता है। हमारे समाज में मनुष्य का श्रेष्ठत्व उसके गुण तथा कर्म पर नहीं तो उसके कुल तथा जाति पर निर्भर रहता है। इसलिए अगर किसी दीन-दलित के घर में कोई प्रतिभावान व्यक्ति जन्म लेता है तथा वह अपनी प्रतिभाशक्ति से कोई मौलिक कार्य करता है तो भी उसे उचित मान-सन्मान नहीं प्राप्त होता। लेकिन अगर किसी उच्च कुल में अगर मंदबुद्धिवाला व्यक्ति भी जन्म लेता है, तो वह जन्मतः महान बन जाता है। समाज में आज भी दीन-दलितों पर अन्याय हो रहा है। "सामंतवादी प्रवृत्ति आज भी गाँवों में प्रचलित है। कुछ बड़े-बड़े लोग बलपूर्वक छोटे व निम्न जाति के लोगों से काम लेते हैं। इनकार करने पर इन दबे हुए लोगों को मारा-पीटा जाता है।"[5]

'देवीना' उपन्यास में काली नामक एक दलित युवती को तथा उसकी विधवा माँ को गाँव के कुछ उच्चवर्णीय लोग बीच चौराह पर दीन दहाड़े मार-पीट रहे हैं। वे लोग उस काली नामक युवती का लैंगिक शोषण करना चाहते हैं लेकिन उसके मना करने पर उसे जोर-जोर से पीटते हैं, उसके सिर से खून तक बह रहा है लेकिन उस गाँव का कोई भी मर्द उसकी सहायता के लिए आगे नहीं आता। काली को मार-पीट करनेवालों

में से एक ने गुस्से से कहा, "देखते क्या हो, इसे खींचते ले चलो।"[6] इस तरह देवीना उपन्यास में जातीयता की समस्या को दिखाते हुए दीन-दलितों के ऊपर होनेवाले पशुतुल्य अन्याय को दिखाया है। उनके जीवन की त्रासदी को दिखाया है।

दीन-दलितोंपर अन्याय अत्याचार होना यह एक आम बात बन गई है। यह अब कोई चौकानेवाली बात नहीं है। आज की खुलेआम दीन-दलितों पर अन्याय, अत्याचार होता है। पर उस अत्याचार से इस दीन को बचानेवाला कोई आगे नहीं आता। देखने वाले हजारो, लाखों होते हैं। लेकिन वे सिर्फ वहाँ तमाशा देखते हैं। क्योंकि जो कुछ घटित हो रहा है वह उन पर नहीं घटित होता है। इसलिए वे वहाँ तमाशा देखकर तुरंत वहाँ से निकल पड़ते हैं। प्रस्तुत देवीना उपन्यास ने दीन-दलितों पर खुले आम अन्याय, अत्याचार होते हुए दिखाया है। 'काली' नामक युवती को तथा उसकी विधवा माता को केवल वह दीन-दलित होने के कारण ही पीटा जाता है। अगर 'काली' किसी ऊँची जात की होती तो ना उसकी यह हालत होती या ना उसे इसतरह जानवर के माफिक मारा-पीटा जाता।

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका देवीना एक दीन-दलित होने के कारण ही उसे अपने उपर हुए हर अन्याय अत्याचार का सामना करना पडता है। वह जब अपने प्रेम की भीख माँगने अपने प्रेमी के घर जाती है तब केवल देवीना की हीन जाँति होने के कारण अपने भाई के दबाव में आकर अपनी प्रेमिका को पहचानने तक इन्कार करता है। 'लहरतारा' गाँव जो अविकसित था उस गाँव में विकास की नई लहर लाने वाली देवीना उस गाँव की साक्षात देवी है। लेकिन गाँव के उच्च कुलीन लोग उसे देवी नहीं मानते। केवल इस बात के कारण की वो एक लावारिस तथा दीन है! अतः प्रस्तुत उपन्यास में दीन-दलितों पर हुए अन्याय अत्याचार को बड़ी वास्तविकता के साथ चित्रित किया है।

4.2 मजदूरी की समस्या

मजदूरी की समस्या वर्तमान जगत की एक बड़ी समस्या है। आज जनसंख्या बड़ी मात्रा में बढ़ रही है लेकिन इसके अनुपात में रोजगार की निर्मिति नहीं हो रही है। अतः मजदूरी की समस्या को दूर करने के लिए सरकार भी प्रयत्न कर रही है। लेकिन सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों के भरोसे जीवन प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। 'गरीबी हटाओ' जैसे नारे बहुत लग चुके। पर गरीब और गरीब हुआ, अमीर और अमीर। देश की दरिद्रता दूर करने के नारे खोखले साबित हुए और कागजों में गरीबी दूर हो गई, लेकिन गरीब वही का वही रहा। सरकार को दोष देने से कुछ नहीं होगा। इसके लिए स्वयं हम भी दोषी है। यदि दरिद्रता, भ्रष्टाचार, अनाचार, अव्यवस्था, बेकारी को दूर करना है तो इसके पीछे छिपी शक्ति को हमें

जड़ से मिटाना होगा। "मजदूर वर्ग ही किसी राष्ट्र के भविष्य निर्धारण की भूमिका का निर्वहन करता है, पूँजीपति तो उन्हीं के श्रम पर अट्टानिका खड़ी कर आनंद लूटते हैं।"[7] प्रस्तुत देवीना उपन्यास में चित्रित मजदूरी की समस्याओं को हम निम्न रूप देख सकते हैं।

4.2.1 पलायनवादी मानसिकता

मजदूरी की समस्या के कारण ही मनुष्य में पलायनवादी मानसिकता का संचार होता है। हम जहाँ निवास करते हैं वहाँ अगर हमें उचित मजदूरी नहीं मिलती है तो मजबुरन हम जहाँ हमें उचित मजदूरी मिलेगी उसी जगह पर पलायन करना पड़ता है। प्रस्तुत उपन्यास में रामदीन नामक एक नौजवान पलायनवादी मानसिकता से ग्रस्त है। वह जिस गाँव में रहता है, उस लहरतारा गाँव में उसे उचित मजदूरी नहीं प्राप्त होती अतः वह अपना गाँव छोड़कर शहर में जाना चाहता है। लेकिन इस उपन्यास की नायिका देवीना उसका रास्ता रोकती है तथा गाँव छोड़कर चले जाने की बात की निंदा करती है। तब वह देवीना से कहता है, "नहीं, यह गाँव 'गाँव' नहीं है। यह चोरों का गाँव है, उठाईगीरों का गाँव है।"[8] अतः इस तरह उचित मजदूरी न मिलने के कारण पलायनवादी मानसिकता का विकास होता है।

रोटी कपडा और मकान यह मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ है। उसे इन आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए हर किस्म का काम करना पड़ता है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित लहरतारा गाँव मजदूरी की समस्या से ग्रस्त है। यह गाँव इतना अप्रगत है कि गाँव में निवासी लोगों को अपने मूलभूत आवश्यकताओं को अपने गाँव में कोई मजदूरी नहीं मिलती। तथा इन लहरतारा ग्रामवासियों को अपने मूलभूत आवश्यकताओं के लिए बंबई, कलकत्ता जैसे शहरों में जाकर रहना पड़ता है। और वहाँ जाकर अपने रोजी रोटी के लिए कुछ भी काम करना पड़ता है।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित 'लहरतारा' गाँव एक इतना अनोखा गाँव है कि गाँव का हर मनुष्य अपने गाँव से दूर शहरों में पलायन करना चाहता है। जिसतरह गाँव का पुरूष वर्ग पलायनवादी मानसिकता का है। उसी प्रकार गाँव की औरतें भी पलायनवादी मानसिकता अपने अंदर लिए हुए हर वक्त मौके की तलाश में है कि कब उन्हें अपने घर से अपने गाँव से भागकर पलायनकर शहरों में जाने का मौक मिले।

हमारे उपन्यास का नायक देवकुमार भी अपने अंदर पलायनवादी मानसिकता लिए अपना जीवन यापन करता है। वह जब अपने बडे भाई को कुछ करके दिखाने की ठानता है। मतलब वह जब बड़ा अमिर आदमी बनना चाहता है। तब वह पैसा कमाने के लिए अपना गाँव ही नहीं तो देश ही छोडकर विदेश चला जाता है। जापान में जाकर वह खूप रूपया कमाता है और अमीर आदमी बनता है। इसतरह प्रस्तुत

उपन्यास में ज्यादा से ज्यादा पात्र पुरूष पात्र हो या स्त्री पात्र हो पलायनवादी मानसिकता में जी रहे हैं।

4.2.2 अर्थप्राप्ति के लिए वाममार्ग का अवलंब

मजदूरी की समस्या से अर्थ प्राप्ति के लिए वाममार्ग का अवलंब किया जाता है। मनुष्य की मूलभूत जरूरतें रोटी, कपड़ा और मकान है। अगर यह जरूरतें पूरी नहीं होती तो मनुष्य कुछ भी करने के लिए तैयार होता है। इन जरूरतों की पूर्ति करने के लिए उसे अगर उचित साधन, उचित मजदूरी नहीं मिलती तो वह मजबूरन वाम मार्ग का रास्ता अपनाना पड़ता है। प्रस्तुत उपन्यास में एक युवक बी.ए. तक पढ़ा है लेकिन उसके पिताजी उसे आगे पढ़ाना नहीं चाहते क्योंकि वे जानते हैं आगे पढ़ाई करने से भी उन्हें उचित नौकरी नहीं मिल सकती। इसलिए वे चाहते हैं कि उनका लड़का कोई काम-धंदा करें अगर अच्छा काम नहीं मिलता तो बूरा काम करें। वे सोचते हैं कि काम अच्छा हो या बूरा हमें सिर्फ मजदूरी तथा पैसों से मतलब है। वे अपने पुत्र को अर्थप्राप्ति के लिए वाममार्ग पर चलने के लिए मजबूर करते हुए कहते हैं, "मुसलमान का लड़का 'आदू' एक महिने में पाँच हजार रुपए कमाके लाया है और तुम वहाँ क्या लड्डू फोड़ रहे हो? तुम फौरन चलो मेरे साथ और आदू के बनो शागिर्द। मुझे मालूम है कैसे लाया है वह पाँच हजार रुपए लंगड़ा, अंधा भिखारी बनकर।"[9] इसतरह मजदूरी के लिए वाममार्ग का ही रास्ता अपनाया जा सकता है।

मनुष्य अपने रोजी रोटी के लिए धन कमाना चाहता है। हर मनुष्य जो शारीरिक या मानसिक काम करता है। वह केवल अपनी मूलभूत जरूरतों के लिए। मनुष्य अपने पेट की आग को बुझाने के लिए अगर उसे उचित मजदूरी का मार्ग नहीं मिलता तो वह अपने पेट की आग को शांत करने के लिए वाममार्ग को चूनता है। क्योंकि मनुष्य के पेट की आग से बढ़कर इस दुनिया में कोई और आग नहीं है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित गाँव का परिवेश इतना भयावह है कि गाँव का हर सदस्य फिर चाहे वह बूढ़ा हो या जवान अर्थ प्राप्ति के लिए वाममार्ग को जल्द से जल्द चुनता है। और इतना ही नहीं तो उसी गाँव का कोई पढ़ा लिखा युवक या युवती ऐसे वाममार्ग से धन कमाने के लिए अगर विरोध करते हैं तो गाँव के बूढ़े लोग तथा उनके परिवारवाले उन्हें वाममार्ग से पैसा कमाने के लिए जबरदस्ती मजबूर करते हैं। ऐसे ही परिवारवालों की जबरदस्ती का शिकार बी.ए. तक पढ़ा रामदीन नामक युवक बनता है। वाममार्ग से अर्थ की प्राप्ति के लिए जिस तरह युवक तथा प्रौढ़ पुरूष कुछ भी करते हैं उसी तरह युवतियाँ तथा प्रौढ नारियाँ भी कुछ भी करने के लिए तत्पर रहती है। अतः प्रस्तुत उपन्यास में अर्थप्राप्ति के लिए वाममार्ग का स्वीकारना एक आम बात बन गई है।

4.2.3 वेश्या व्यवसाय की प्रवृत्ति

मजदूरी की समस्या से ही वैश्या व्यवसाय की प्रवृत्ति का आविर्भाव होता है। अब पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियाएँ भी पारिवारीक जिम्मेंदारीयों को निभा रही है। अतः पुरुष को अगर कोई मजदूरी नहीं मिलती और आर्थिक कठिनाईयों में जीना मुश्किल होता है तब उस परिवार की स्त्री शांति से कैसे बैठेगी? अतः वह भी कोई तो मजदूरी करना चाहती है। वह जहाँ नौकरी करती है, वहाँ के पुरुष मंडली की कामुक नजरों का उसे सामना करना पड़ता है। इसी से वेश्या व्यवसाय की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है। आज तो पैसों के लिए वेश्या व्यवसाय प्रवृत्ति एक सुलभ तथा पर्याप्त धन कमाने का पेशा माना जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास में भी वेश्या व्यवसाय प्रवृत्ति पर अंकन हुआ है। इसमें लहरतारा नामक गाँव है जिसमें उचित मजदूरी न मिलने के कारण इस गाँव की सभी जवान नारियाँ वेश्या व्यवसाय करने के लिए कलकत्ता, मुंबई जैसे शहरों में रवाना होती है। शहरों में जाकर अपने देह की बिक्री करके वे सिर्फ चार महिनों में ही सालभर का गुजारा हो सके इतना धन बटोरती है। उनके इस काम में उनके परिवारवाले साथ देते हैं तथा उनके पति भी साथ देते हैं। अतः अगर उस लहरतारा गाँव में अगर नर-नारियों को उचित मजदूरी मिलती तो क्या उनके ऊपर इस तरह वेश्या व्यवसाय करने की नौबत आती? लेकिन उन युवतियों को समझाने तथा उन्हें उचित मजदूरी का मार्ग बताने के समय 'देवीना' बताती है, "आज से तुम्हारा यह धंदा बंद। तुम आज से चरखे पर सूत कातोगी, यहीं तुम्हारे लिए उचित मजदूरी है।"[10] इस तरह मजदूरी की समस्या का सामना करते-करते ही वेश्या व्यवसाय की समस्या ने जन्म लिया है।

समाज भले ही आज वेश्या व्यवसाय की तरफ हीनता की नजर से देखता हो लेकिन उसे निर्माण करने में समाज का ही हात है। इसी समाज ने वेश्या व्यवसाय को विकसित किया है। तथा समाज में मान प्रतिष्ठा के साथ रहने वाले समाज के उन ठेकेदारों ने इसे पनाह दी है जो सस्ती कामुकता के शौकीन है। आज भी वर्तमान समाज में समाज के उन ठेकेदारों के आशिर्वाद से वेश्या व्यवसाय विद्यमान है।

पुरुष प्रधान परंपरागत समाज व्यवस्था में परिवार के गुजर-बसर के लिए उस परिवार का पुरुष मुखिया जिम्मेदार होता है। लेकिन वो अगर कामचोर हो, वह अगर कोई काम करने के लिए असमर्थ हो या अगर वह किसी बुरी आदत का शिकार हो तो उस परिवार का चुला कैसे जलेगा? उस परिवार की कभी न मिटने वाली भूख को शांत कौन करेगा? तब हमेशा उस परिवार की नारी आगे आती है। और अपने कंधों पर उस परिवार का सारा बोझ उठती है। अतः इस समय वह अपने परिवार की रोजी-

रोटी के लिए कौन-सी भी मजदूरी करने के लिए तैयार होती है। अतः उस अबला नारी की इस दयनीय दशा का फायदा उठाकर हमारे ही समाज के अमिरजादे ऐसी नारी को अपने यहाँ काम पर लगाते हैं। लेकिन उनकी कामुक नजरों से वह बेचारी अबला नारी नहीं बच पाती! अतः समाज की इसी सस्ती कामुकतावाली मानसिकता के कारण ही नारी को मजबुरन वेश्या व्यवसाय करना पड़ता है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित लहरतारा नामक गाँव में जानहजारा, गुलमेहंदी, फुलगेंदा, काली आदि अनेक युक्तिया है जो अपने तथा अपने परिवार के लिए वेश्या व्यवसाय करती है।

4.2.4 चोरी-लुटमार प्रवृत्ति का निर्माण

मजदूरी की समस्या से अनेक गंभीर समस्याओं का निर्माण हुआ है। उचित मजदूरी के अभाव में मनुष्य अपनी मुलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर सकता। लेकिन मनुष्य को अगर जीवित रहना है तो किसी भी तरह इन मुलभूत जरूरतों को पूरा करना है। इसी कारण ही आज दिन-दहाड़े डकैती होती है। आज चोरी-लुटमार, उठाईगिरी की घटनाएँ रोजमर्रा की बन गई है। समाज में किसी आदमी की सिर्फ उन्नति देखी जाती है तथा उसकी अमीरी की मिसाल दी जाती है लेकिन कोई तनिकभर यह नहीं देखता, सोचता की उसने इतना सारा धन कमाया कैसे? कल तक का रोड़पति आज करोड़पति कैसे बना? इस तरह के सवाल कोई पूछ नहीं सकता। क्योंकि हम सब उसकी प्रगति देखते हैं उसके पीछे क्या वास्तविकता है इसे नहीं देखते।

प्रस्तुत उपन्यास में मजदूरी ना मिलने के कारण लहरतारा गाँव के लोग खुल्लमखुल्ला चोरी-लूटमार का धंदा करते हैं। चोरी का धंदा करने के लिए यह चोर मंडली अलग-अलग दल बनाकर मुंबई, कलकत्ता जैसे बड़े-बड़े शहरों में चले जाते हैं। यह लोग तरह-तरह के भेस बनाकर आमजनता को लूटते हैं। कोई व्यापारी बनता है, कोई ज्योतिषी बनता है। कोई तीर्थयात्री बनता है, तो कोई गायक, वादक बनता है। आदि तरह-तरह के स्वांग रचाकर वे शहरी लोगों को ठगाते हैं। 'देवीना' जब उन चोरों को अपना यह चोरी का धंदा बंद करने को कहती है, तब उन चोरों में से एक आगे आकर कहता है, "बहिन जी, आप हमारे रास्ते से हट जाइए, नहीं तो बुरा होगा। आप हमारे पेट पर लात मारने चली है। हम इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते।" इस तरह मजदूरी की समस्या से तंग आकर आम इंन्सान भी चोर बन जाता है।

समाज में दिन-ब-दिन बेकारी की संख्या तेजी से बढ़ रही है। अतः जो युवक या युवती रोजगार करने के लिए पूर्णतः सक्षम है तथा कोई भी रोजगार करने को लायक है और उसे अगर कोई रोजगार नहीं मिलता तो वह बेकार है। अतः ऐसा बेकार युवक अपनी बेकारी मिटाने के लिए हर पल, हर समय मजदूरी की तलाश में रहता है।

क्योंकि उसके उपर अपने परिवार के लोगों की जिम्मेदारी तो होती ही है। साथ-साथ अपने भविष्य की भी चिंता उसे दिन-रात सताती है। अतः वह अपनी बेकारी को मिटाने के लिए किसी भी तरह का काम करने के लिए तत्पर रहता है। क्योंकि उस वक्त वह बेकार आदमी सिर्फ काम के बदले दाम के बारे में सोचता है। फिर चाहे वह काम शराफत का हो या बेईमानी का हो उस वक्त वह सिर्फ पैसों के बारे में ही सोचता है।

इस उपन्यास में चित्रित 'लहरतारा' गाँव में कोई मजदूरी न मिलने के कारण सारे गाँव के युवक तथा युवतियाँ बेकार है। अतः वह अपने तथा परिवार के लिए कोई उचित काम न मिलने के कारण चोरी, लुटमारी, का धंदा करते हैं। इस चोरी लुटमारी के धंदे में वे नैतिकता, मानवता, बंधुभाव आदि उदात्त भावनाओं को तिलांजलि देते हैं। और उस गाँव के नर तथा नारियाँ तरह-तरह के भेस बनाकर बड़े-बड़े शहरों में जाकर तथा अपने आस-पास के गाँवों में जाकर सुखी संपन्न लोगों को लुटते हैं। इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में चोरी-लुटमार की प्रवृत्ति को बड़ी वात्सविकता के साथ प्रस्तुत किया है।

4.3 अनैतिकता की समस्या

अनैतिकता की समस्या दिन-ब-दिन व्यापक बनती जा रही है। आधुनिकता, पाश्चिमात्यिकरण के नाम पर नैतिकता का गला घोंटा जा रहा है। आम आदमी अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में नैतिकता की बातें भूल चुका है। इस संबंध में डॉ. लाल कहते हैं, "उपदेश, ऊँची बातें अपनी जगह है, जीवन से बहुत ऊपर उठे हुए जीवन नीचे है। उसके अनुभव और भी नीचे, गर्त में हैं। विचारों मैं जीवन सर्वत्र महान है, पर अपने अनुभवों में यह उतना ही छोटा, निम्न और कुरूप है। इसलिए मुझे छोटापन, निम्नता और कुरूपता प्रिय है क्योंकि यहीं हमें जिलाते हैं।"[11] अतः अपनी मुलभूत सुविधाओं की प्राप्ति के लिए मनुष्य नैतिकता के बंधनों को तोड़ता है तथा अनैतिकतापूर्ण जीवन जीता है। स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय राजनैतिक और सामाजिक जीवन में कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आए। स्वतंत्रता ने जहाँ आर्थिक और सामाजिक विकास के द्वारा उन्मुक्त किए, वहाँ सत्ता के केंद्रीकरण और आर्थिक स्त्रोतों के एकाधिकार के कारण कई समस्याएँ भी खड़ी हुई। इसके साथ देश में एक सुविधाभोगी, संपन्न वर्ग अस्तित्व में आया जिससे जनसाधारण का दारिद्र्य निरंतर बढ़ता गया। कुछ संपन्न लोगों के हाथों में सत्ता और अर्थ के पूँजीभूत होने के कारण मानवीय प्रवृत्तियों, सामाजिक व्यवहार और पारस्पारिक संबंधों में भी अंतर उपस्थित हुए। फलतः पाश्चात्य प्रभाव के कारण भौतिकवादी दृष्टि और विघटनशील प्रवृत्तियों के प्रोत्साहन के साथ देश में कई राजनैतिक और सामाजिक विसंगतियाँ उभरी। फलतः समाज में नैतिकता के नामपर खुले आम अनैतिकता विचरण करने लगी है।

4.3.1 विवाहपूर्व मातृत्व की समस्या

अनैतिकता की समस्या में विवाहपूर्व मातृत्व यह एक बड़ी समस्या बन गई है। समाज में मातृत्व संस्कार यह विवाह के पश्चात ही नैतिक माना जाता लेकिन पाश्चात्य प्रभाव में आकर नर-नारी में खुले यौन संबंध प्रस्थापित होने लगे है। फलतः वर्तमान समाज के सामने अब नैतिकता को कायम रखने की बहुत बड़ी चुनौती खड़ी है। ऊपरी तौर से नैतिकता की दुहाई देनेवाले खुद अनैतिकता की दलदल में घूसें है। प्रस्तुत देवीना उपन्यास की नायिका 'देवीना' एक नाजायज युवती है। वह अपने माँ से विवाह पूर्व ही जन्मं लेती है। अतः देवीना की माँ लोकलाज के कारण उन नन्हीं सी बालिका (देवीना) को सड़क के किनारे फेंक देती है। इस तरह देवीना विवाहपूर्व जन्मी एक बच्ची है, अपने इसतरह से जन्म लेने का पछतावा उसे बाद में होता रहता है।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित लहरतारा नामक गाँव में किसी लड़की को विवाहपूर्व बच्चा होना तथा उसे फेंक देना एक आम बात है। इस संबंध में उसी गाँव की भागवंती नामक युवती देवीना को बताती है कि, "इस लहरतारा गाँव में जब किसी जवान, बिनब्याही लड़की को कोई बच्चा पैदा हो जाता है और उसे इस आफत से बचना होता है तो वह माँ अपने बच्चे को यहाँ से दूर ले जाकर कहीं रास्ते पर छोड़ देती है। जैसा जिसका भाग कोई धरमवाला मिलता तो उसे उठा लेता। नहीं मिलता तो सियार-कूकर खा जाते।"[12] इस तरह लहरतारा गाँव का मानो नैतिकता और अनैतिकता के बीच का अंतर मानो मिटा ही गया था।

समाज में विवाहपूर्व मातृत्व की प्राप्ति होना एक अक्षम्य अपराध माना जाता है। तथा इस प्रकार के नारी को समाज में हिनता की दृष्टि से देखा जाता है। लेकिन पाश्चिमात्य संस्कृति के कारण हमारी भारतीय संस्कृति को ग्रहण लगा है। क्योंकि भारतीय संस्कृति पूरे संसार में आदर्श मानी जाती है। लेकिन इस पाश्चिमात्यीकरण के माहौल में अब भारतीय संस्कृति में विदेशी संस्कृति के रंग घुलमिल जाने लगे है। परिणाम स्वरूप बाहरी संस्कृति के अंधानुकरण के कारण हमारी संस्कृति में सबसे महत्त्वपूर्ण माने जानेवाले नैतिकता के संस्कार अब फीके पड़ने लगे है। तथा नैतिकता के बंधन शिथिल होने लगे है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका 'देवीना' अपनी माँ की विवाहपूर्व पैदा हुई एक अनैतिक संतान ही है। जिस नारी को विवाहपूर्व मातृत्व प्राप्त होता है उसका दर्द वहीं जाने। साथ ही जो संतान अपने माँ के पाप की निशानी हो उसकी यातनाएँ वही नाजायज संतान जाने। ऐसी संतान का जीवन जीते जी नरक बन जाता है। वह नाजायज संतान अगर कोई युवक होता है तो उसकी यातनाएँ थोड़ी कम होती है। क्योंकि इस पुरूष प्रधान व्यवस्था में अपने आप को छुपा लेता है। लेकिन अगर वह नाजायज संतान अगर कोई युवती होती है तो उसका जीवन नरकमय बन जाता

है। जैसे-जैसे वह युवती बड़ी होती है उसकी समस्याएँ भी उसी अनुमान में बढ़ती है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका खुद एक नाजायज संतान है। अतः उस दर्द को उसने भलीभाँति अनुभव किया था। इसलिए वह 'लहरतारा' नामक गाँव में युवतियों में जागृती लाती है। तथा उन्हें विवाहपूर्व मातृत्व से परावृत्त करती है।

4.3.2 साधू संन्यासियों के रूप में अनाचार

हमारे यहाँ एक परंपरा से समाज को नैतिकता का पाठ पढ़ाने के काम साधू-संन्यासी करते आए है। हमारा आचरण कैसा होना चाहिए यह हमें साधू-संन्यासी बताते हैं। लेकिन वही साधु-संन्यासी अगर तरह-तरह के वेश बनाकर आम जनता को ठगने लगे, वही अगर अनैतिकतापूर्ण आचरण करने लगे तो हमारी नैतिकता का क्या होगा? नैतिकता के संबंध में डॉ. लाल कहते हैं, "प्राचीन काल में विद्‌यार्थी ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन करते थे और गुरु उनकी पत्नी एवं समस्त परिवार को श्रद्‌धा की दृष्टि से देखते थे परंतु आज विद्‌यार्थियों का नैतिक पतन हो चुका है। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के 'सुन्दर रस' नाटक में पंडितराज के शक्तिदेव और जैनाथ दो शिष्य है। दोनों अपनी गुरु की पत्नी की बहिन बीना से अनुचित प्रेम करने लगते हैं। परंतु वह उनको डाँटती है। शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत वे दोनों अपने प्रेम-पत्र बीना के नाम छोड़ जाते हैं। डॉ. लाल ने विद्‌यार्थीयों में उत्तम चरित्र की कमी को बतलाने की चेष्टा की है।"[13]

प्रस्तुत उपन्यास में भी लहरतारा नामक गाँव के लोग साधु-संन्यासियों का रूप बनाकर तथा उनके जैसी ही पोशाख बनाकर और भाषा शैली अपनाकर मुंबई, कलकत्ता जैसे बड़े-बड़े शहरों में जाकर लोगों को लूटते हैं। लोगों को भविष्य बताना, भाग्य की रेखा बताना, जन्मकुंडली बताना, जादू-टोना सिखाना आदि तरह-तरह के धंदे करते हैं। अतः देवीना उन्हें पूछती है, "क्या इस कमाई से तुम्हें सुख मिलता है?"[14] इस तरह अनैतिकतापूर्ण व्यवहार किया जाता था।

प्रस्तुत देवीना उपन्यास में चित्रित अनैतिकता की समस्या में साधु संन्यासियों के रूप में अनाचार यह एक गंभीर समस्या के रूप में चित्रित हुई है। मनुष्य अपने मूलभूत जरूरतों के लिए तथा उन जरूरतों को पूरा कनरे के लिए अर्थ प्राप्ति के लिए कोई भी काम करता है। यहाँ तक यह बात ठीक है। लेकिन कोई मनुष्य अगर पैसा कमाने के लिए साधु संन्यासी का रूप धारण करे तो यह बात निंदनीय है। क्योंकि सदियों से हमारी संस्कृति साधु-संन्यासियों को ईश्वर समान मानती आई है। हमारे लिए साधु संन्यासियों के वचन देववाणी की तरह अनमोल है। अब अगर कोई इन साधु-संन्यासियों के नाम पर कोई अनैतिकतापूर्ण व्यवहार करे तो यह बात उनके नाम पर एक कलंक है। अतः प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित लहरतारा गाँव मानो साधु-संन्यासियों के नाम पर अनाचार करनेवाला मेला ही हो। गाँव के युवक तथा प्रौढ़ भी साधु-

सन्यासियों का रूप धारण करके लोगों से खूब पैसा कमाते हैं। इसके साथ-साथ गाँव की युवतियाँ भी साधुओं का रूप धारण करके लोगों को ठगाती है। इस गाँव के युवक साधुओं का भेंस बनाकर सिरपर चोटी सजाकर, माथे पर भबूत लगाकर तथा हाथों में माला फेरकर किसी चौराहे पर बैठते हैं। तथा उसी चौराहे पर से जब शहर के लोग आते जाते हैं तब वे ढोंगी युवक अपना साधू का जाल बिछाकर उसमें शहरी लोगों को फँसाते हैं। भविष्य देखो। भविष्य देखो का नारा लगाकर जो भी नर या नारी उनके हाथ लग जाती उसे वह अपनी चालाख बुद्धिमत्ता से चार इधर की तथा चार उधर की बाते बताकर उससे खूब पैसा लूटते। इसीतरह प्रस्तुत उपन्यास में साधु-संन्यासियों के रूप में अनाचार नजर आता है।

4.3.3 कामुक प्रवृत्ति

कामुक प्रवृत्ति, वासनामयता के अधिकता के कारण नैतिकता को ग्रहण लग जाता है। जिस समाज में सस्ती कामुकता विद्यमान हो वहाँ नैतिकता को ढूँढ़ना गलत होगा। नैतिकता-अनैतिकता, पाप-पुण्य संबंधी डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल कहते हैं कि, "जो कि कुछ दबाव, संकोच के साथ किया जाता है, वहीं पाप है।"[15] तथा लाल आगे मनुष्य के नैतिक-अनैतिक आचरण संबंधी कहते हैं कि, "सभी अभाव में पलते हैं, कोई धन और भोग के अभाव में, तो कोई प्रेम, विश्वास और आदर्शों के अभाव में किसी-न-किसी अभाव में सभी पलते हैं। तभी वे जीते हैं। पर अभावों को भोगने के लिए नहीं, वह असंभव है। बस इसलिए कि उसके प्रति मोह है।"[16]

प्रस्तुत उपन्यास में कामुक प्रवृत्ति की खुलकर अभिव्यंजना हुई हैं। लहरतारा गाँव कामुकता, वासनावृत्ति के कारण बदनाम है। इसी कारण उस गाँव की लड़की को कोई दूसरा गाँववाला नहीं ब्याहता तथा दूसरा गाँववाला इस बदनाम गाँव में अपनी बेटी नहीं देता। क्योंकि इस लहरतारा गाँव में वासना इतनी फैल चूकि थी कि बाप-बेटी का रिश्ता भी खत्म हो चुका था। इस गाँव के लोग अपनी वासना की आग बुझाने के लिए बड़ी रकम देकर शहर से छोटी-छोटी अनाथ लड़कियाँ खरीद लाते। फिर उन्हें पालपोसकर बड़ा करते तथा उसके जवान होने पर उसके साथ शारीरिक संबंध रखते और उससे जी भरने पर किसी बूढ़े कुपात्र के हाथों सौंप देते थे। इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में कामुक प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं।

लहरतारा गाँव में कामुकता को अनैतिकता मानने की मानसिकता किसी की नर या नारी में नहीं थी। क्योंकि सारा गाँव ही कामुक प्रवृत्ति में जी रहा था। उस गाँव में किसी लड़की का जवान बनना मानो पाप था। हर कोई उस जवान लड़की के पीछे लगता। जिस तरह किसी खिले हुए फूल पर अनेक भ्रमर मंडराते हैं उसी प्रकार की अवस्था लहरतारा गाँव की जवान युवतियों की थी। अपनी जवानी की आग को बुझाने

के लिए गाँव के युवकों के साथ-साथ गाँव के अबाल वृद्ध भी कलकत्ता बंबई जैसे शहरों से पैसा देकर अनाथ बालिकाओं को खरीदकर अपने साथ रखते थे उस बालिका को घर में अपनी बेटी सा पालते लेकिन यह बेटी का नाता सिर्फ उसके बच्ची होने तक ही बना रहता। फिर आगे जब वही बच्ची जवान होती तो उनकी वासना भरी नजर से उस युवती का बचना मुश्किल बात बन जाती।

इस कामुक प्रवृत्ति के माहौल में अगर किसी युवती को विवाहपूर्व मातृत्व आता था। तब वह अपने उस नाजायज बच्चे को गाँव के बाहर किसी सडक के किनारे फेंक देती। अगर कोई इन्सानीयतवाला उसे देखता तो इस लावारिस, नाजायज बच्चे को उठाके पालता। और अगर कोई उस बच्चे को नहीं उठाता तो? तो क्या गाँव के कुत्ते सियार उस बच्चे को खा जाते। इस गाँव में इस घटना को कोई अपने दिलो, दिमाग में नहीं रखता। क्योंकि इस तरह की वारदाते इस गाँव में अक्सर होती थी। अतः यह घटना, प्रसंग से सभी परिचित थे। इसितरह प्रस्तूत उपन्यास में चित्रित लहरतारा गाँव में नैतिकता से किसी को कोई सरोकार नहीं था।

4.4 परंपरागत मानसिकता की समस्या

मनुष्य पर परंपरागत मानसिकता का गहरा प्रभाव रहता है। आज का मनुष्य वर्तमानकालीन जीवन जीते हुए भी अतीत कालीन परंपरागत मानसिकता में रहकर अपना जीवन जीता है। साहित्य में भी परंपरागत मानसिकता और आधुनिक मानसिकता के बीच निर्मित फासले को अभिव्यक्ति मिली है। परंपरागत मानसिकता के बारे में डॉ. लाल 'मिस्टर अभिमन्यु' की भूमिका में कहते हैं कि, "दो युगों के लंबे अंतराल के बावजूद भी दोनों की त्रासदी एक सी है। अभिमन्यु की त्रासदी बिल्कुल आज की त्रासदी है। उसके सवाल बिल्कुल आज के सवाल है। उसकी मृत्यु आज की मृत्यु है। उसका चक्रव्युह बिल्कुल आज का चक्रव्युह है।"[17] आधुनिक मानव के रूप में 'मिस्टर अभिमन्यु' के चक्रव्युह का निर्माण उसके समाज, पद, शिक्षा एवं सम्मान आदि के परिवेश से हुआ है। इन सब के चक्रव्युह में फँसकर वह अपनी नियति को अभिशप्त एवं करुण बना डालता है और प्रयत्न करने पर भी उससे निष्कति के उपाय नहीं खोज पाता। उसके लिए हर विश्वास जेलखाना है, हर मूल्य किलेबंदी है। यहीं उसकी त्रासदी है। प्रस्तुत देवीना उपन्यास में चित्रित परंपरागत मानसिकता को हम निम्न रूप से देख सकते हैं।

4.4.1 आत्माएँ पुनर्जन्म लेती है की मानसिकता

देवीना उपन्यास में परंपरागत मानसिकता के अनेक उदाहरण मिलते हैं। उपन्यास के प्रारंभ में ही पारंपारिक मानसिकता के दर्शन होते हैं। जिस पारंपारिक कथा के आधार पर इस उपन्यास का विकास होता है वही कथा पारंपारिक मानसिकता से

युक्त है। मांडू का किला जो बाजबहादुर नामक सरदार ने अपनी प्रेमिका रूपमती के लिए बनवाया था। बाजबहादुर और रूपमती दोनों में असीम प्रेम था। आज भी मांडू किले के आसपास के गाँव में उनकी प्रेमकथा के तरह-तरह के किस्से सुनाए जाते हैं और उनके प्रेम को अमर बताया जाता है। मांडू गाँववालों की यह मानसिकता है कि बाजबहादुर और रूपमती के प्रणयकथा को बरसो बीत चुके है लेकिन आज भी उनकी आत्माएँ यहाँ तरह-तरह के रूप लेकर भटकती रहती है। इसी परंपरागत मानसिकता से प्रभावित होकर मांडू गाँव का एक निवासी देवकुमार से बतलाता है कि, "कभी कोई चिड़ियाँ बनकर, कभी मेघ और हवा बनकर, कभी फल और फूल की सुगंध होकर बाजबहादुर और रूपमती की आत्माएँ रोज यहाँ आती है।"[18] इस तरह मांडू निवासी लोग परंपरागत मानसिकता में विश्वास रखते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित जो मांडू गाँव है वह मांडू किले के परिवेश में बसा है। इस मांडू गाँव के लोग अधिक मात्रा में अशिक्षित है। अतः अपने अशिक्षा के कारण गाँव के समाज जीवन में अनेक प्रकार की अंधधारणाएँ तथा प्राचिन परंपरागत मान्यताएँ मिलती है। इनमें से कतिपय परंपरागत मानसिकताओं में से आत्माएँ पुनर्जन्म लेती है की मानसिकता एक है। मांडू गाँववालों को अपने परिवेश में बसे मांडू किले का बड़ा गर्व है। वे बड़े रौब के साथ मांडू का किला देखने आनेवाले हर यात्री को अपने गाँव का, मांडू किले का महत्व बड़ा चढ़ाकर आलंकारीकता के साथ बतलाते हैं। वे बतलाते हैं कि यह मांडू का किला अमर प्रेम की निशानी है। बाजबहादुर नामक प्रेमी सरदार ने अपनी प्रेमिका तथा लावण्यामती रूपमती के लिए यह किला बनवाया है। और अब इस किले को न जाने कितने साल हुए है, अब बाजबहादूर तथा रूपमती को भी गुजरे हुए कितने साल हुए है। लेकिन आज की बाजबहादुर तथा रूपमती जिंदा है। उनका प्रेम जिंदा है। वे किसी भी जिवजंतु के रूप में आज भी इस मांडू किले में आते-जाते हैं। अतः प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित मांडू गाँव के लोग आत्माएँ पुनर्जन्म लेती है कि मानसिकता में जीते हैं।

4.4.2 उच्च-नीच की मानसिकता

उच्च-नीच की मानसिकता परंपरा से चली आई है। हर कोई बड़ा बनना चाहता है तथा जो अपने से छोटा है उसे और छोटा बनाना चाहता है। इस उच्च-नीच की लड़ाई में जीत हमेशा उच्चवर्गीय की ही होती है तथा निम्नवर्गीय को हमेशा उच्चवर्गीयों की छत्र-छाया में ही अपना जीवनज्ञापन करना पड़ता है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका देवीना एक लावारिस बच्ची है। अतः वह जन्मतः नीच कहलाई जाती है। तथा उसे जो पालते हैं वह माता-पिता मंगलबाबा तथा बुचिया को भी नीच माना जाता है। इस बात से बुचिया की माँ बनिया काफी नाराज होती है। तथा खुद को तथा बूचियाँ को नीच

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

माननेवाले गाँववालों पर क्रोध से बरसती है। क्योंकि वह जानती है कि ऊपर से उच्चता का स्वांग रचनेवाले ये गाँववाले भीतर से उससे भी नीच है। अपनी पत्नी को समझाते हुए मंगलबाबा कहते हैं कि, "अरे, जब सब दीन हैं तो हमीं कहाँ से अदीन रहेंगे।"[19] वे बुचिया कि माँ बनिया को समझाते हैं कि सब दीन है, जहाँ हर एक की यह कोशिश है कि दूसरा उससे छोटा है, वहाँ कौन दीन नहीं है? जाँत-पाँत का यह विचार छूत-अछूत का यह विश्वास उसी कारण तो है। वहाँ जो अस्त्र-शस्त्र है जिससे मारकर दूसरे को छोटा बना दिया जाए। सो हम मंगल से मंगदीन है। जो मूल मंगल है वह तो मंगल है ही।

उच्च-नीच की मानसिकता समाज के नामपर एक कलंक है। जब तक समाज में यह उच्च-नीचता की मानसिकता बनी रहेगी तब तक आदर्श समाज व्यवस्था का निर्माण नहीं हो सकता। प्रस्तुत उपन्यास में कतिपय ऐसे प्रसंग आते हैं जिस में उच्च-नीचता का दर्शन हमें होता है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका देवीना इस उच्च-नीच मानसिकता की प्रथम शिकार होती है। देवीना के साथ-साथ उसके पिताजी तथा माताजी को भी समाज की उच्च-नीचता की मानसिकता का शिकार होना पड़ता है।

आगरा की शाही कोठी में रहनेवाले राजकुमार अपने आप को राजामहाराजाओं की तरह मानते हैं। तथा वे उच्च-नीच की मानसिकता की भावना को सही माननेवाले है। वे हमेशा अपनी दृष्टि उच्च-नीचता में बनाए रखते थे। वे अपने आगरा की कोठी में रहनेवाले नौंकरों के साथ हमेशा सकती से पेश आते हैं। तथा बार-बार नौकरों से कहते हैं कि अपने औकात में रहो। वे चितपावन नामक नौंकर को हमेश हिनता की नजर से देखते हैं। तथा अपनी कोठी में रहनेवाली नौकरानीया 'माधवी' तथा 'ज्योस्त्नाबाई' को भी हमेशा नीचता की नजर से देखते हैं। और उन्हें हमेशा पशुतुल्य समझते हैं। प्रस्तुत उपन्यास का एक अन्य पात्र 'भँवरा' नामक युवक इसी उच्च-नीच की मानसिकता का शिकार बना है। भँवरा को उसके गाँव का मुखिया एक जमीनदार साहू बड़ी नीचता की हालत में रखता है। तथा उसे अपने गाँव से निकाल देता है। अतः प्रस्तुत उपन्यास में परंपरागत उच्च-नीच की मानसिकता को अपने अंदर लिए हुए जीनेवाले प्रतिपय पात्रों को चित्रित किया है।

4.4.3 अंधविश्वासु मानसिकता

परंपरागत मानसिकता की समस्या में अंधविश्वासु मानसिकता एक बहुत बड़ी समस्या है। आज हम वर्तमान युग में जीते हैं, मनुष्य चाँद पर रहने की सोच रहा है लेकिन दूसरी तरफ वह उतना ही परंपराप्रिय, अंधविश्वासु मानसिकता में जी रहा है। परंपरागत अंधविश्वास की चपेट में आकर मनुष्य ढेरों बुरे कर्म कर चुका है और करता रहा है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित लहरतारा नामक गाँव के निवासी परंपरागत

अंधविश्वासु मानसिकता में जीते हैं। गाँववाले मानते हैं कि बनिया इस गाँव पर नाराज थी क्योंकि उसकी बेटी बूचिया (देवीना) को गाँववालों ने कलंकित माना था और उसकी भरसक निंदा की थी। इस बात से गुस्से में आकर बूचिया की माँ ने (बनियाने) इस लहरतारा गाँव को श्राप दिया कि इस गाँव पर हैजा पड़ेगा।"[20] अतः उसके श्राप के अनुसार गाँव पर हैजा पड़ा। उसमें सबसे पहले बनिया ही मरी और बाद में गाँव के अन्य लोग मरे। इस तरह की अंधविस्वासु मानसिकता में लोग जी रहे थे।

मनुष्य का अंधविश्वासु मानसिकता में जीना खुद के व्यक्तिमत्व विकास के लिए बड़ा हानीकारक होता है। तथा अंधविश्वासु मानसिकता में जीवनयापन करना समाज के विकास में बडा बाधक होता है। मनुष्य के अंतरात्मा में होनेवाली अंधविश्वासु मानसिकता एक चक्रव्यूह की तरह होती है। एक बार मनुष्य अगर इसमें फँस जाता है तो इसके अंध जाल से बाहर निकलना बडा मुश्किल हो जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित 'काली' नामक विवाहीता नारी इस परंपरागत अंविश्वासु मानसिकता से ग्रस्त है। वह अपने पति के खिलाफ एक शब्द भी बोलना ईश्वर के खिलाफ एक शब्द बोलना मानती है। वह पति को परमेश्वर तथा अपने पति के वाणी को देववाणी मानती है। अतः इसी अंध मानसिकता के कारण वह अपने पति के हर अन्याय-अत्याचार को सहती है। इतना ही नही तो अगर उसका पति उसे पैसे के लिए बेचे तो वह अपने ईश्वर (पति) के लिए खुद को बेचने के लिए भी तैयार है। इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में परंपरागत अंधविश्वासु मानसिकता प्रस्तुत हुई है।

4.4.4 अतीत को वर्तमान समझने की मानसिकता

अतीत 'अतीत' होता है और वर्तमान 'वर्तमान' होता है फिर भी मनुष्य इस बुनियादी अंतर को भूल जाता है। "जो वर्तमान नहीं जी पाता वही बीती हुई घटनाओं में जाकर सिर छिपाता है। वही स्मृतियों से मन बहलाने की झूठी कोशिश करता है।"[21] प्रस्तुत उपन्यास का नायक देवकुमार खुद को बाजबहादुर समझता है तो नायिका देवीना खुद को रूपमती समझती है लेकिन बाजबहादुर और रूपमती का प्रेम तो अतीत है तथा वर्तमान देवकुमार और देवीना का प्रेम वर्तमान है। फिर भी नायक देवकुमार तथा नायिका देवीना अपने प्रेम को अतीतकालीन मानते हैं। इस बात पर मंगलबाबा अपनी बेटी देवीना को समझाते हुए कहते हैं, "बेटी, भूत यथार्थ नहीं है क्योंकि वह वर्तमान नहीं है। वह यथार्थ था अपने वर्तमान में। वर्तमान को वर्तमान में ही देखना होता है। तभी तो देखने का काम तुम दोनों ने भविष्य में टाल दिया। हाँ, देखो वर्तमान में यहीं इस क्षण एक-दूसरे को। यही देखना ही तो भोगना है। पर यह भोग नहीं हो पाता, तभी तो भूत सवार हो गया तुम दोनों पर। अपने से कटकर टूट चले गए अतीत में। अरे, अतीत तो खंडहर है। क्यो? उसमें से रस बहकर आगे निकल गया। रह गया

खड़ा वही मांडू का खंडहर।"[22] इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में अतीत को वर्तमान समझने की परंपरागत मानसिकता पाई जाती है।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित परंपरागत कतिपय मानसिकतायओं में अतीत को वर्तमान समझने की मानसिकता यह एक प्रमुख मानसिकता है। प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु के विकास में बुनियादी रूप में यही अतीत को वर्तमान समझने की मानसिकता प्रमुख रही है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक देवकुमार तथा नायिका देवीना अपने आप को अतीत कालीन प्रेमी बाजबहादुर तथा रूपमती मानते हैं। और अपने वर्तमान कालीन प्रेम को अतीत की भावना में बह जाने के कारण बाजबहादुर तथा रूपमती का ही प्रेम मानते हैं। लेकिन अतीत की भावभूमि पर अपने वर्तमान जीवन की शुरूवात करने वाले देवकुमार तथा देवीना इस पति-पत्नी को वर्तमान की वास्तविकता तथा भूतकाल की भयावहता का पता चलता है। और अंत में उन्हें अपने अतीत को वर्तमान समझने की मानसिकता पर पछतावा होता है।

4.4.5 जातिवादी मानसिकता

परंपरागत मानसिकता की समस्या में जातिवादी मानसिकता की समस्या भी एक जटील समस्या है। जाँति-पाँति के भेदभाव को जड़ से मिटाने के लिए कतिपय संतों ने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया लेकिन आज भी हम परंपरागत जातिवादी मानसिकता में जी रहे हैं। प्रस्तुत देवीना उपन्यास में जातिवादी मानसिकता स्पष्टता दृष्टिगोचर होती है। उपन्यास की नायिका देवीना एक लावारिस युवती है अतः वह नीच जाति की मानी जाती है। उपन्यास का नायक देवकुमार उसी देवीना से विवाह करना चाहता है लेकिन परंपरागत जातिवादी मानसिकता का शिकार उसका भाई राजकुमार उस विवाह का विरोध करते हुए कहता है, "वह किसी की छोड़ी हुई लड़की है जिसके न बाप का पता, न माँ का।"[23] इस तरह परंपरागत जातिवादी मानसिकता दिखती है।

परंपरा से चली आई इस जातिवादी मासिकता को समाप्त करने के लिए समाजसुधारकों ने नए-नए मार्गों का अवलंब किया है। उनमें से एक मार्ग समाज जागृती भी है। लेकिन समाज जागृती इस मार्ग का अवलंब करने से लोगों में जाँति व्यवस्था संबंधी जागृती होने के बजाय गलतफहमी ही फैल जाती है। वैसे देखा जाए तो आज के समाज को परंपरा से चली आई जाँति प्रथा का तथा उससे समाज में देश में या राष्ट्रों में उठने वाले तुफानों का भलिभाँति ग्यान है। अतः आज का समाज जागृत होते हुए की सोने का नाटक कर रहा है। अतः सोए हुए को जगाना आसान है लेकिन जो जागृत है पर सोने का नाटक कर रहा है ऐसे को जगाना बडा नामोमकीन होता है। इसितरह प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित समाजजीवन में परंपरागत जातिवादी मानसिकता में जीने वाले

समाज का चित्रण सरलता से स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। उपन्यास की नायिका देवीना को भी इस परंपरागत जातिवादी मानसिकता का शिकार होना पड़ता है। तथा 'भंवरा' नामक युवका को भी वह केवल निम्न जाति का होने के कारण उसे अपने खुद के घर से, गाँव से भगाया जाता है। और उस पर चोरी का इल्जाम लगाया जाता है।

4.4.6 परंपरागत पुरुषी अहंकार

पुरुष प्रधान संस्कृति में पुरुषों के अहंकारी मानसिकता का शिकार हर एक को होना पड़ता है। सबसे पहली बारी है नारी की तथा उसके बाद उस परिवार में जो आर्थिक दृष्टि से दुर्बल है उस पुरुष को भी आर्थिक दृष्टि से संपन्न पुरुष की अहंकारी मानसिकता का शिकार होना पड़ता है। "सचमुच आर्थिक विषमता और गरीबी हमारे समाज के लिए एक बहुत बड़ा अभिशाप है, जिसमें पड़कर आदमी फिर आदमी नहीं रह जाता। उसकी समस्त संवेदनाएँ मर जाती है और वह कुछ भी करने को तैयार हो जाता है।"[24] प्रस्तुत उपन्यास में भी उपन्यास का नायक देवकुमार अपने बड़े भाई राजकुमार की पुरुषी अहंकारी वृत्ति का शिकार हो जाता है। देवकुमार अपनी प्रेमिका 'देवीना' से विवाह करना चाहता है। उसकी कुल, जाँति-पाँति से उसे कुछ लेना-देना नहीं है। अतः वह जब इस विवाह संबंधी अपने भाई से कहता है तब इस विवाह का विरोध करते हुए अपने पुरुषी अहंकार में देवकुमार से कहता है, "मेरे आदमी तुम्हारे पीछे लगे थे। मुझे एक-एक बात का पता है। यह खुशी की बात है, तुम झूठे नहीं निकले। आखिर तुम किसके भाई हो। मेरे।"[25] इस तरह देवकुमार को अपने भाई राजकुमार की अहंकार की अग्नी में जलना पड़ता है।

जिस तरह देवकुमार को अपने बड़े भाई राजकुमार की परंपरागत पुरूषी अहंकारी मानसिकता का शिकार होना पड़ा था। उसी तरह देवीना को अपने पति देवकुमार की परंपरागत पुरुषी अहंकारी वृत्ति का शिकार होना पड़ता है। अतः जब देवकुमार अपने बड़े भाई के अहंकार के सामने अपना जीवन यापन करना बड़ी कठीण बात मानता था। वह अपने भाई के अहंकार को कुचलना चाहता था लेकिन बेचारा हालात के आगे मजबुर था। बहुत कुछ चाहते हुए भी कुछ कर नहीं सकता था। लेकिन वही एक समय का बेचारा देवकुमार जब पैसे वाला बड़ा शेठ बनता है तब वह अपने भाई से भी बडा परंपरागत पुरूषी अहंकार का शिकार बनता है। और अपनी परंपरागत पुरूषी अहंकार की ज्वाला में अपनी पत्नी देवीना को हरपल तडपाता है। विवाह के पूर्व मिठी-मिठी बाते बोलने वाला प्रेमी देवकुमार अब विवाह के बाद अपनी प्रेमिका से बड़ी सक्ती से पेश आता है। जैसा की पहले तय हुआ था पूरे चार साल बाद अपने पति से मिलने उसके घर जाती है तब अमिरी के नशे में चूर उसका पति देवकुमार उसे अपमानित करता है। तथा अपने परंपरागत पुरूषी अहंकार में अपने पत्नी को घर से निकाल देता

है। अपने प्रेमिका, पत्नी ने उसके लिए किए हुए अंतरिक बलिदान को वह अपने पुरूषी अहंकार में भूल जाता है। अतः प्रस्तुत उपन्यास में परंपरागत पुरूषी अहंकार की विविध झांकिया प्रस्तुत हुई है।

4.4.7 नारी भोग की वस्तु है की मानसिकता

प्राचीन काल से नारी को सिर्फ भोग की वस्तु माना है, उसे सिर्फ वासना की नजर से देखा जाता है। अतः नारी संबंधी परंपरागत मानसिकता दूषित बनी हुई मिलती है। प्रस्तुत उपन्यास में कतिपय नारीयों को इस परंपरागत अत्याचारी मानसिकता का शिकार होना पड़ा है। इस उपन्यास का शोषित नारी पात्र 'काली' है। जिसे लहरतारा गाँव के अहंकारी पुरुष दिन दहाड़े उठाकर उसकी इज्जत लुटना चाहते हैं। तथा काली के प्रतिकार करने पर उसे मारा-पीटा जाता है। उसके माथे से खून टपकता है। वह दहाड़ मारकर रोती है फिर भी उसे बचानेवाला कोई नहीं है। तथा दूसरी शोषित नारी है इस उपन्यास की नायिका देवीना। जो अपने पति से अपमानित होती है तथा उसका देवर राजकुमार उसकी इज्जत खरीदना चाहता है। वह देवीना को घर से भगाते हुए अपने नौकर से कहता है, "तिजौरी में से दस हजार रुपए लाकर देवीना को दे दो।"[26] इस तरह नारी के तरफ भोगपरक दृष्टि से देखने की मानसिकता पाई जाती है। देवीना अपने प्रेमी देवकुमार से सच्चा प्रेम करती है लेकिन अंतिम समय वह उसे कहता है कि, "मैं आपसे कल बात कर सकता हूँ। इस समय मेरे पास बिल्कुल भी वक्त नहीं है। मुझे एक जरूरी मिटिंग में शामिल होना है।" इस तरह उसकी भावना के साथ खिलवाड़ किया जाता है। इस मानसिकता संबंधी लक्ष्मीजी कहती है कि, "पति-पत्नी चाहे प्रेमविवाह के फलस्वरूप मिले हो अथवा उनका विवाह परंपरागत ढंग से संपन्न हुआ हो उनके दांपत्य व्यक्तित्व में कुछ ऐसे अदृश्य अतलाशे और अनदेखे पक्ष रह जाते हैं जिसके कारण वे पारस्पारिक संबंधों को औपचारिक और दृराववश पूरी तरह नहीं जी पाता और जब ये संबंध जीने कठीण हो जाते हैं तो हृदय के विद्रोह एवं तनाव की स्थिति में वे विषम दांपत्य-जीवन को झेलते दिखाई देते हैं। उनके व्यवहार में ढोंग, कृत्रिमता, प्रदर्शन और औपचारिकता विद्‌यमान रहने लगती है।"[27]

प्रस्तुत उपन्यास में खल पात्र के रूप में राजकुमार के चरित्र को चित्रित की दृष्टि भोगपरक है। अपने भाई की पत्नी के अपने भाई के प्रति होनेवाले अंतरिक प्रेम को वह केवल भोग तथा वासना ही मानता है। तथा पैसे देकर उसे अपने भाई को भुलने के लिए कहता है। अगर वह परंपरागत नारी के प्रति भोगपरक दृष्टि से नहीं देखता। तो अवश्य अपनी भाई के पत्नी के अपने भाई के प्रति होनेवाले प्यार की इज्जत करता लेकिन ऐसा घटित नहीं होता। इतना ही नहीं तो वह अपने घर में होनेवाली नौकरानी

'माधवी' तथा ज्योत्स्नाबाई को केवल भोग की दृष्टि से देखता है। 'माधवी' नामक नौकरानी का वे जब चाहे तब लैंगिक शोषण करता है तथा माधवी से अपना जी भरने पर उसे एक तहखाने में बंद करता है। उसी तरह राजकुमार अपने यहाँ रखी हुई ज्योत्स्नाबाई नामक नौकरानी को भी भोग की दृष्टि से देखते थे। वह राजकुमार की नौकरानी तो थी ही साथ-साथ उनकी रखैल, नर्तकी भी थी। वह अपने जीवन को एक अभिशाप मानती थी। वह तानपूरे पर गा रही थीं -

"मीरा भक्ति करे रे प्रकट की,
नाथ तुम जानत हो सब घट की।
पायल घुंघुरू रुमझुम बाजैं,
लाज राखो घुंघट की।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर,
सूरत बनी जैसी नट की।
मीरा भक्ति करे रे प्रकट की...." [28]

निष्कर्ष

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के देवीना उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्याएँ भले ही आज अतीत की समस्याएँ हो लेकिन वास्तविकता तो यह है कि आज के वर्तमान समाज में भी यह सामाजिक समस्याएँ विद्‌यमान है। आज के मध्य-वर्ग का बुद्‌धिजीवी स्त्री-पुरुष किसी पर आस्था और चाह रखते हुए भी उसे अपना संपूर्ण आत्मसमर्पण नहीं दे सकता। यह उसकी हार नहीं, विवशता है। क्योंकि, उसके पास संपूर्ण ऐसी कोई अनुभूति ही नहीं होती। वह अपने जन्म से ही संपूर्णता की कामना करते-करते बीच ही में न जाने कितनी बार टूट जाता है। इस तरह वह अधूरा ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे टुकड़ों में उसका व्यक्तित्व निर्मित होता है। और वे छोटे-छोटे टुकड़े इतने निरोह-निर्बल होते हैं कि जीवन की छोटी-सी बात, छोटी-सी कमी उन्हें सदैव सुलगाती रहती है। प्रस्तुत उपन्यास में लाल ने जातीयता की समस्या, मजदूरी की समस्या, परंपरागत मानसिकता की समस्या तथा अनैतिकता की समस्या आदि सामाजिक समस्याओं का सफलता के साथ चित्रण किया है।

* * *

संदर्भ सूची

अ. क्र		पृ.
1.	डॉ. विणा गौतम - हिंदी नाटक : आज तक	289
2.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	30
3.	डॉ. लाजपतराय गुप्त - बीसवी शताब्दी के हिंदी नाटक समाजशास्त्रीय अध्ययन	221
4.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	50
5.	दयाशंकर सिंह यादव - कुरूक्षेत्र अंक 7	37
6.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	56
7.	सुरेशलाल श्रीवास्तव - कुरूक्षेत्र अंक 7	10
8.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	59
9.	वही	60
10.	वही	72
11.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - काले फूल का पौधा	123
12.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	88
13.	डॉ. लाजपतराय गुप्त - बीसवी शताब्दी के हिंदी नाटक समाजशास्त्रीय अध्यपन	238
14.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	67
15.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - वसंत की प्रतीक्षा	34
16.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - काले फूल का पौधा	123
17.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - आधुनिक हिंदी नाटक चरित्र सृष्टि के आयाम	412
18.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	22
19.	वही	51
20.	वही	33
21.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - शृंगार	95
22.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	41
23.	वही	50
24.	डॉ. रमेश तीवारी - हिंदी एकांकी - स्वरूप और विश्लेषण	130
25.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	50
26.	वही	81
27.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - आधुनिक हिंदी नाटक चरित्र - सृष्टि के आयाम	446
28.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	82

* * *